हिंदी निबंध
एवं
प्रारुप लेखन

मुख्य परीक्षा

प्रश्नपत्र-06

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com
9713300123, 6262856797, 6262856798

प्रश्न पत्र -06

हिन्दी निबन्ध एवं प्रारूप लेखन

❒ **प्रथम निबंध (लगभग 1000 शब्दों में)** **अंक - 50**

- निम्नांकित क्षेत्रों से निबंध पूछा जा सकता है। जैसे- पर्यावरण, विज्ञान, धर्म-आध्यात्म, शिक्षा में गुणवत्ता, आधुनिकीकरण, भूमंडलीकरण, उदारीकरण, कृत्रिम बुद्धिमता, परंपरागत खेल, सांस्कृतिक विरासत, सभ्यता एवं संस्कृति, योग एवं स्वास्थ्य, ई-मार्केटिंग, ई-कॉमर्स, नेतृत्व एवं विकास, सुशासन, नौकरशाही, जनजातीय विकास, राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता, सामुदायिक जीवन, सामाजिक सरोकार, नवीकरणीय ऊर्जा, सतत् विकास लक्ष्य, मादक पदार्थों का सेवन एवं दुष्प्रभाव, घरेलू हिंसा, बाह्य एवं आंतरिक सुरक्षा के मुद्दे, व्यवसायगत सरलता आदि।

❒ **द्वितीय निबंध - (लगभग 500 शब्दों में)** **अंक - 25**

- समसामयिक समस्याएँ एवं निदान।

❒ **प्रारूप लेखन - (लगभग 250 शब्दों में कोई दो)** **अंक - 25**

- शासकीय एवं अर्द्धशासकीय पत्र, परिपत्र (सर्क्यूलर), प्रपत्र, विज्ञापन, आदेश, पृष्ठांकन, अनुस्मारक (स्मरण पत्र), प्रतिवेदन (रिपोर्ट राइटिंग), अधिसूचना (नोटिफिकेशन), टिप्पण लेखन आदि।

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	निबंध	01 – 03
02	पर्यावरण	04 – 08
03	विज्ञान	09 – 11
04	धर्म–अध्यात्म	12 – 15
05	शिक्षा में गुणवत्ता	16 – 20
06	आधुनिकीकरण	21 – 23
07	भू–मण्डलीकरण	24 – 34
08	उदारीकरण	35 – 37
09	कृत्रिम बुद्धिमता	38 – 43
10	सांस्कृतिक विरासत	44 – 49
11	सभ्यता एवं संस्कृति	50 – 55
12	योग एवं स्वास्थ्य	56 – 59
13	ई–मार्केटिंग	60 – 63
14	ई–कॉमर्स	64 – 66
15	नेतृत्व एवं विकास	67 – 71
16	सुशासन	72 – 74
17	नौकरशाही	75 – 80
18	जनजातीय विकास	81 – 85
19	राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय एकता	86 – 88
20	सामुदायिक जीवन	89 – 93
21	सामाजिक सरोकार	94 – 97
22	नवीकरणीय ऊर्जा	98 – 101
23	सतत् विकास लक्ष्य	102 – 107
24	मादक द्रव्यों के प्रभाव एवं दुष्परिणाम	108 – 112
25	घरेलू हिंसा	113 – 117

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
26	बाह्य एवं आंतरिक सुरक्षा के मुद्दे	118 – 128
	नक्सलवाद	119 – 122
	अलगाववाद	123 – 125
	आतंकवाद	126 – 128
27	व्यवसायगत सरलता	129 – 133
28	प्रारूप लेखन	134
29	शासकीय पत्र	135 – 137
30	अर्द्धशासकीय पत्र	138 – 139
31	परिपत्र (सर्क्यूलर)	140 – 141
32	प्रपत्र	142
33	विज्ञापन	143 – 144
34	कार्यालय आदेश	145 – 146
35	पृष्ठांकन,	147
36	अनुस्मारक (स्मरण पत्र)	148
37	प्रतिवेदन (रिपोर्ट राइटिंग)	149 – 155
38	अधिसूचना (नोटिफिकेशन)	156 – 157
39	टिप्पण लेखन	158 – 165

160/4 - A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)
e-mail : aakarias2014@gmail.com ; **Website :** www.aakarias.com
CONTACT : 9713300123, 6262856797, 6262856798

निबंध

❑ निबंध क्या है ?

निबंध गद्य में लिखा जाता है। उपन्यास, कहानी, संस्मरण आदि के समान यह भी गद्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। साहित्य का वह स्वरूप जिसमें विषय का विचारपूर्ण एवं रोचक पद्धति से सुसंबंध एवं तर्क पूर्ण प्रतिपादन किया जाता है। एक तरफ निबंध मनोभावों की स्वच्छंद परिकल्पनीय उड़ान, मानवीय जिज्ञासा, ज्ञान एवं विचारों का स्वतंत्र प्रदर्शन है। वहीं दूसरी ओर किसी विषय वस्तु पर गहन समझ तार्किक विचारशीलता के साथ उसके स्वरूप, प्रकृति, गुण, दोष, संभाविता आदि की गद्यात्मक, विश्लेषित और समीक्षक अभिव्यक्ति है।

सार्थकता के साथ प्रभावोत्परकता के साथ विषय वस्तु सम्बन्धित विचारों की तारतम्यता और क्रम बद्धता के विस्तृत और विचारणीय व्याख्या को निबंध कहते हैं। निबंध आकार में छोटा भी हो सकता है और बड़ा भी। दो-तीन पृष्ठों के निबंध भी लिखे जाते हैं और पच्चीस-तीस पृष्ठों के भी।

आपको सामान्यत: 8-10 पृष्ठों के निबंध लिखने का अभ्यास करना चाहिए। निबंध का विषय कुछ भी हो सकता है। आप किसी भी वस्तु, घटना, विचार अथवा भाव पर निबंध लिख सकते हैं। आवश्यक बात यह है कि उस निबंध में आपके अपने विचार या आपके अपने अनुभव होने चाहिए। यदि आप दूसरों के विचारों को पढ़ते या सुनते भी हैं, तब भी उन्हें अपनी भाषा में प्रस्तुत करें। पढ़ने वाले को ऐसा प्रतीत होना चाहिए कि आप अपनी बात या अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

❑ निबंध के प्रकार

विषय और लिखने वाले की मन:स्थिति के अनुसार अलग-अलग तरह के निबंध लिखे जा सकते हैं। इस प्रकार निबंध अनेक प्रकार के होते हैं। हम यहां 3 प्रकार के निबंधों पर विचार करेंगे। ये हैं -

निबंध के प्रकार

- वर्णनात्मक
- विचारात्मक
- भावात्मक

❖ वर्णनात्मक निबंध

इसमें किसी वस्तु, घटना, प्रदेश आदि का वर्णन किया जाता है। उदाहरण के लिए, होली, दीपावली, यात्रा, दर्शनीय स्थल या किसी खेल के विषय पर जब हम निबंध लिखेंगे, तो उसमें विषय का वर्णन किया जाएगा। इस प्रकार के निबंधों में घटनाओं का एक क्रम होता है। इनमें साधारण बातें अधिक होती हैं। ये सूचनात्मक होते हैं तथा इन्हें लिखना अपेक्षाकृत सरल होता है।

❖ विचारात्मक निबंध

ऐसा निबंध लिखने के लिए चिंतन-मनन की अधिक आवश्यकता होती है। इनमें बुद्धि-तत्त्व प्रधान होता है तथा ये प्राय: किसी व्यक्तिगत, सामाजिक या राजनीतिक समस्या पर लिखे जाते हैं। दूरदर्शन का जीवन पर प्रभाव, दहेज-प्रथा, प्रजातंत्र आदि किसी भी विषय पर विचारात्मक निबंध लिखा जा सकता है। इसमें विषय के अच्छे-बुरे पहलुओं पर विचार किया जाता है, तर्क दिए जाते हैं तथा कभी-कभी समस्या को हल करने के सुझाव भी दिए जाते हैं।

❖ भावात्मक निबंध या भाव प्रधान निबंध

इसमें आप विषय के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इनमें कल्पना की प्रधानता रहती है, तर्क की बहुत अधिक गुंजाइश नहीं होती। उदाहरण – मित्रता, बुढ़ापा, यदि मैं अध्यापक होता आदि विषयों पर निबंध लिखते समय आप अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त कर सकते हैं। भाव की तीव्रता होने के कारण इन निबंधों में एक प्रकार की आत्मीयता या अपनापन रहता है। यह अपनापन ही इस प्रकार के निबंधों की विशेषता है।

इसी प्रकार निबंध को विषय-वस्तु के आधार पर निम्नलिखित वर्गों में बांट सकते हैं –

1) सामाजिक निबंध
2) सांस्कृतिक निबंध
3) देश-प्रेम/राष्ट्रीय चेतना परक निबंध
4) विज्ञान, तकनीक एवं प्रौद्योगिकी परक निबंध
5) व्यायाम एवं खेल संबंधी निबंध
6) शिक्षा एवं ज्ञान विषयक निबंध
7) राजनीतिक निबंध
8) प्रेरक व्यक्तित्व
9) सूक्तिपरक निबंध
10) मनोरंजन के साधन
11) भाषा, साहित्य एवं प्रभाव परक-निबंध आदि

❐ निबंध के अंग

निबंध के 3 प्रमुख अंग होते हैं –

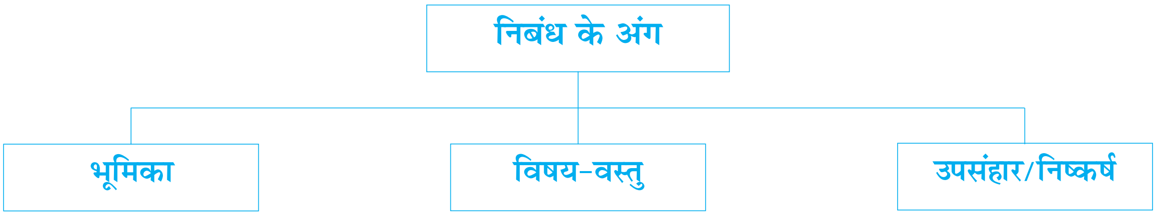

❖ भूमिका

भूमिका को प्रस्तावना भी कहते हैं। इसमें निबंध के विषय को स्पष्ट किया जाता है। भूमिका रोचक होगी, तभी पाठक निबंध पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे। सवाल यह आता है कि निबंध की भूमिका कैसे लिखी जाए? निबंध की शुरुआत किसी लेखक, कवि, चिंतक या राजनीतिज्ञ के कथन से की जा सकती है।

यह सही है कि सुप्रसिद्ध कथन से निबंध प्रारंभ करने से पाठक के मन-मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। दूसरा प्रकार है कि किसी घटना के उल्लेख से निबंध प्रारंभ किया जाए। भूमिका में हाल ही में घटी किसी घटना से विषय को जोड़कर भी परिवेश का निर्माण किया जा सकता है।

❖ विषय-वस्तु

निबंध का मुख्य भाग है। इसमें विषय का परिचय दिया जाता है, उसका रूप स्पष्ट किया जाता है। विषय का एक ही केंद्रीय भाव होता है, उसका विस्तार करने की आवश्यकता होती है। विषय के विभिन्न पक्ष होते हैं। पक्ष-विपक्ष में तर्क देकर विषय-वस्तु को गहराई से समझाया जाता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं, जिनसे प्राप्त होने वाले लाभ या हानि का उल्लेख भी किया जा सकता है, जैसे विज्ञान के लाभ और हानि।

आवश्यकता पड़ने पर उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए उसे अपनाने की बात भी की जा सकती है जैसे-दहेज-प्रथा। इसी अंश में आप अपना मत भी प्रस्तुत कर सकते हैं। अपना मत देते समय विनम्र भाषा का प्रयोग करना अच्छा होता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कोई ऐसी बात न कही जाए जिसका प्रभाव किसी एक पक्ष के लिए आपत्तिजनक हो।

विषय से संबंधित नई-से-नई जानकारी देना निबंध को प्रभावशाली बना देता है। आप विषय-वस्तु के किसी पक्ष पर प्रकाश डालने वाली कविता की पंक्तियों का उल्लेख भी कर सकते हैं। किंतु, ध्यान रखने की बात यह है कि प्रत्येक बिंदु को अलग अनुच्छेद में लिखिए। विषय की रूपरेखा बनाते हुए हमें प्रमुख विषय-बिंदु अथवा बिंदुओं के भी बिंदु बना लेने चाहिए। कुछ विषय ऐसे होंगे जिनके बिंदुओं के भी उप-बिंदु हो सकते हैं। उप-बिंदुओं से तात्पर्य यह है कि उस प्रमुख बिंदु के अंतर्गत हम किन-किन बातों का समावेश करना चाहते हैं - जैसे दहेज प्रथा पर निबंध लिखते हुए विषय-वस्तु के मुख्य विषय बिंदु और उप-बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं :

मुख्य बिंदु	उपबिंदु
दहेज क्यों	- पुत्री का नया घर
	- नई गृहस्थी
	- सहायक उपयोगी वस्तुओं की भेंट
	- धीरे-धीरे प्रथा में विकृति आना
	- दहेज देने की शुरुआत
दहेज प्रथा की बुराइयां	- विवाह पूर्व दूल्हे के लिए भाव-ताव
	- दूल्हे पशुओं की भाँति बिकते हैं
	- विवाह के बाद बहू पर अत्याचार
	- वर पक्ष की ओर से बढ़ती माँगे
	- मानसिक पीड़ा पहुंचाना

❖ उपसंहार/निष्कर्ष लेखन

निबंध के मुख्य भाग यानी विषय वस्तुओं के बिंदुओं में जो बातें आपने लिखी थी, जो तर्क दिए थे उनका निष्कर्ष और समाधान उपसंहार में दिया जाता है। विभिन्न बातों में तालमेल बिठाकर उसे प्रभावपूर्ण बनाना चाहिए। जिस प्रकार भूमिका लिखने के लिए कोई विधि नहीं है उसी प्रकार उपसंहार की भी कोई निश्चित विधि नहीं है।

दहेज प्रथा के संबंध में उपसंहार के निम्नलिखित बिंदु हो सकते हैं -

1) सारा भारतीय समाज दहेज प्रथा के अभिशाप से पीड़ित
2) समाज में कलंक
3) विदेशों में बदनामी
4) प्रगति में बाधक
5) नवयुवकों का दायित्व
6) कुप्रथा से मुक्ति आदि

पर्यावरण

विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं में प्रकृति को मां का दर्जा दिया गया था, जहां मानव सभ्यता अपनी माता का पूजन कर स्वयं को सुरक्षित महसूस करती थी। यही कारण है कि भारतीय सभ्यता प्रारंभ से ही जल, वायु, धरती, वन, पशु-पक्षियों, के प्रति संरक्षणवादी दृष्टिकोण की समर्थक रही है। हमने प्रारंभ से ही प्रकृति प्रेम को सर्वोपरि रखा है, जिसका प्रमाण हमारे वेद, उपनिषद् एवं पुराण करते हैं। अथर्ववेद के भूमिसूक्त में कहा गया है -

अरण्य ते पृथिवी स्योन मस्तु, मातरम् औषधीनाम्।
मा ते मर्म विमुघ्वरि मा ते हृदयमर्पितम्।।

अर्थात् - हे भूमि, तेरे वन हमारे लिए सुखदायी हों। भूमि तेरे वृक्षों को मैं इस तरह कांटू कि शीघ्र ही वे पुन: अंकुरित हो जाए। सम्पूर्ण रूप से काटकर मैं तेरे मर्मस्थल पर प्रहार न करूं। भूमि को औषधियों की माता की संज्ञा दी गई है।

भारत में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति प्रेम की जड़े बहुत गहरी है, जिन्हें हम निरन्तर सींचते आए हैं। हमने धरती को माता कहकर सम्बोधित किया है और जीवनदायिनी नदियों को भी मां के समतुल्य माना है।

पर्यावरण संरक्षण के जिस भारतीय दर्शन की बुनियाद भारत के तपस्वियों, ऋषियों और मुनियों ने रखी, उसे हमारे सम्राटों एवं शासकों ने राजकीय संरक्षण भी दिया। उन्होंने जनहित कार्यों में उन कार्यों को वरीयता दी, जो पर्यावरण संरक्षण से जुड़े थे। चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, हर्षवर्धन एवं शेरशाह सूरी जैसे शासकों ने बड़े-बड़े सरोवरों जलाशयों का निर्माण करवाया। साथ ही फलदार-छायादार वृक्षों का वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए।

कर दिया मधु और सौरभ दान सारा एक दिन, किन्तु रोता कौन है तेरे लिए दानी सुमन।
मत व्यथित हो फूल, किसको सुख दिया संसार ने स्वार्थमय सबको बनाया है यहां करतार ने।

● **महादेवी वर्मा**

उक्त पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि प्रकृति तो हमें सर्वस्व प्रदान करती है, किन्तु हम स्वार्थमय होकर उसी धारा जिसे हम मां कहते हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में उसी माँ धरा की छाती छलनी करने के लिए आतुर है। परिणामत: आज समूचा विश्व पर्यावरण असंतुलन, जलवायु परिवर्तन जैसी अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है।

❖ वैश्विक जोखिम सूचकांक, 2020 के अनुसार (जर्मन वाच, जर्मनी)

जलवायु परिवर्तन की समस्याएं त्वरित गति से बढ़ती जा रही है, जिससे मौसम-प्रतिकूलता के लक्षण दिखाई देते हैं, जैसे - ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी, शीत ऋतु में दिन-प्रतिदिन का तापमान तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है।

❒ पर्यावरण : अर्थ और परिभाषा

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है - परि + आवरण। परि का अर्थ है चारों ओर, जबकि आवरण से आशय है एक प्रकार का घेरा। सरल शब्दों में हमारे चारों ओर उपस्थिति ऐसा घेरा या आवरण, जिसमें सभी पंच तत्वों का समन्वय हो। दूसरे शब्दों में मानव जन्म से मृत्यु तक वनस्पति, जीव-जन्तु, सूर्य, वायु एवं भूमि से अनन्य रूप से जुड़ा हुआ है और इन्हीं पंचतत्वों से मानव शरीर का निर्माण हुआ है। यही सब हमारे चारों ओर विद्यमान है। इसे ही पर्यावरण कहा जाता है।

❖ परिभाषा

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के अनुसार पर्यावरण के अन्तर्गत जल, वायु और भूमि है और वह अन्तवर्ती क्षेत्र अंत:संलघ्न है, जो जल, वायु, भूमि तथा मानव, अन्य जीवित प्राणियों, पादपों, सूक्ष्म जीवों और सम्पत्ति के बीच विद्यमान है।

- **टांसले** के शब्दों में प्रभावकारी दशाओं का वह सम्पूर्ण योग, जिसमें जीव रहते हैं, पर्यावरण कहलाता है।
- **डेविस** के अनुसार मनुष्य के सम्बन्ध में पर्यावरण से अर्थ भू-तल पर मनुष्यों के चारों ओर फैले उन सभी भौतिक रूपों से है, जिसमें वह निरन्तर प्रभावित होता रहता है।

भारतीय संस्कृति ने भारतवासियों को पर्यावरण और प्रकृति प्रेम को जीवन से अभिन्न रूप से जोड़कर इसके संरक्षण के संस्कार विकसित किए हैं। एक व्यक्ति द्वारा पालित एवं पोषित वृक्ष एक पुत्र से भी अधिक महत्व रखता है। देवता इसके फूलों से, पथिक (राहगीर) इसकी छाया में विश्राम कर तथा मानव इसके फलों का रसास्वादन कर इन वृक्षों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है।

❑ पर्यावरण : मानव की आश्रय स्थली

पर्यावरण और मनुष्य एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं, अर्थात् - मनुष्य पर्यावरण पर पूरी तरह से निर्भर है। पर्यावरण के बिना मनुष्य अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता है। पर्यावरण न केवल एक माँ के रूप में हमारी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, बल्कि मानसिक शांति और संयम भी प्रदान करता है।

हमारे आसपास के प्राकृतिक संसाधन ही मानव जीवन को सरल एवं साधन सम्पन्न बनाते हैं। इसके बिना हमारे विकास के मार्ग पर प्रगतिशील होना सम्भ्व ही नहीं है। हमें यह बात हृदय से समझनी होगी कि प्रकृति का स्वस्थ होना मानव जीवन के चिरकालीन अस्तित्व को सम्भव बनाता है। पर्यावरण में विकृत्त तत्वों का समावेशन भावि-सभ्यता के भविष्य पर प्रश्न चिह्न खड़ा करता है।

प्राकृतिक वातावरण को घटक संसाधन के रूप में ही उपयोग किया जाना चाहिए। हमें भौतिक जरूरतों के लिए और जीवन के उद्देश्यों के लिए इसका शोषण नहीं करना चाहिए।

❑ पर्यावरण और विकास के नवीन आयाम

मनुष्य ने अपने स्वार्थवश संसाधनों के निरन्तर दोहन से विकास के नित-नये नवीन आयाम तय कर स्वयं को प्रगतिशील व समृद्ध बनाया है, किन्तु ऐसे विकास का क्या मूल्य जो मातृत्व (प्रकृति) की बलि देकर प्राप्त किया गया हो?

हमें अपने स्वार्थ को किनारे रखकर भविष्य की पीढ़ियों को ध्यान में रखकर सोचना होगा कि हमें जो अमूल्य संसाधन विरासत के रूप में अपने पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं। हम अगली पीढ़ी को किस प्रकार हस्तान्तरित करेंगे। यह एक गंभीर प्रश्न के रूपमें हमारे सामने विद्यमान है। विकास मानवता के समक्ष सबसे बड़ी जरूरत के साथ-साथ सबसे बड़ी चुनौती के रूप में भी उपस्थित है। ऐसे में आवश्यकता है मध्यम मार्ग के सिद्धान्त की।

सर्वप्रथम 1987 में प्रख्यात पर्यावरणविद ब्रंटलैण्ड ने सतत् विकास की आवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार सतत् विकास वह विकास है, जिसमें वर्तमान पीढ़ी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति आने वाली पीढ़ी की आवश्यकताओं को बिना हानि पहुंचाए करती है। सतत् या धारणीय विकास प्रकृति के साथ मानव के साहचर्य, उसके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना पर आधारित है। यदि इसका गहनता से अध्ययन किया जाए, तो हमें ज्ञात होता है कि सतत् विकास की अवधारणा हमारी प्राचीन जीवन पद्धति, जो सुख-शांति, समृद्धि, सौहार्द तथा सन्तोष के समावेश के साथ प्रकृति से निकटता तथा नैसर्गिक चिंतन पर आधारित थी।

❑ पर्यावरण की रक्षा, दुनिया की सुरक्षा

पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है, क्योंकि पर्यावरण ही पृथ्वी पर मानव जीवन के अस्तित्व का आधार है। पर्यावरण से स्वस्थ जीवन जीने के लिए शुद्ध जल, वायु, शुद्ध भोजन उपलब्ध कराता है। अगर सीधे तौर पर कहा जाए, तो मानव और पर्यावरण एक-दूसरे के पूरक है और दोनों एक-दूसरे पर पूर्णत: निर्भर है। यदि किसी भी प्राकृतिक एवं मानव निर्मित कारणों से पर्यावरण प्रभावित होता है, तो उसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है।

पर्यावरण प्रदूषण की वजह से जलवायु और मौसम चक्र में परिवर्तन, मानव जीवन को कई रूपों में प्रभावित करता है और तो और यह परिवर्तन मानव जीवन के असित्व पर भी गहरा खतरा पैदा करता है। यद्यपि आज विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है, लेकिन प्रकृति ने जो हमें उपलब्ध करवाया है, उसकी कोई तुलना नहीं है। इसलिए भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु मनुष्य को प्रकृति का दोहन करने से बचना चाहिए। पर्यावरण मानव जीवन का अभिन्न अंग है, अर्थात् - इसकी रक्षार्थ हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए।

❐ पर्यावरण, प्रौद्योगिकी, प्रगति और प्रदूषण

इसमें कोई दो राय नहीं है कि विज्ञान की उन्नत तकनीक ने मनुष्य के जीवन को बेहद आसान बनाया है, जिससे न केवल समय की बचत हुई है, बल्कि मनुष्य ने काफी प्रगति भी की है। एक तरह विज्ञान से प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है तो वहीं दूसरी ओर उद्योगों से निकलने वाला धुआं और दूषित पदार्थ कई तरह के प्रदूषण को जन्म दे रहे हैं और पर्यावरण के समक्ष जलवायु परिवर्तन, हिम स्खलन, जल-वायु-ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याओं का संकट उत्पन्न कर रहे हैं।

द गार्जियन एण्ड यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉनिन्सन के अनुसार गहन कृषि, निरन्तर मछली पालन, वन्य जीवों का शिकार, बढ़ती आबादी के कारण वन विनाश अम्ल वर्षा और जलवायु परिवर्तन सम्पूर्ण पृथ्वी के लिए संकट बने हुए हैं। हमारी पृथ्वी पर एक प्राकृतिक वातावरण है, जिसे पारिस्थितिकी तंत्र की संज्ञा दी जाती है। इस पारिस्थितिकी तंत्र में सभी मनुष्य, पौधे, जीव-जन्तु, पहाड़, पर्वत, विशाल समुद्र, चट्टानें, ग्लेशियर आदि है, जो कि मानव की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

वर्तमान में इंजीनियरिंग के विकास के परिणामस्वरूप संसाधनों की कमी और पर्यावरण का विनाश हो रहा है। वहीं इंजीनियरिंग और विनिर्माण उद्योग में तेजी से बदलाव के कारण पर्यावरण में भी भारी बदलाव आया है। विनिर्माण उद्योगों ने धातु, प्लास्टिक, तेल और रबर जैसी सामग्रियों के उपयोग में वृद्धि की है। इनका प्रयोग कार उत्पादन, शिपिंग उद्योग, कपास की मिलों, प्लास्टिक उद्योग, कोयला खनन, भारी मशीने आदि बनाने में किया जाता है। गहन अध्ययन से हमें पता चलता है कि यह पर्यावरण के प्रतिकूल है।

❐ पर्यावरण को प्रभावित करने वाले कारक

हर दिन मानव अपनी गतिविधियों से पृथ्वी के पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है। पर्यावरण के समक्ष उपस्थित प्रमुख मुद्दों का सामना किसी एक संगठन, एक समुदाय या एक देश द्वारा नहीं किया जा सकता, क्योंकि ये समस्याएं समूचे विश्व में वितरित है।

यहां पर हम प्रमुख विनाशकारी वर्तमान पर्यावरण के मुद्दों की चर्चा करेंगे, जो मनुष्य के जीवन को प्रभावित करते हैं। यदि इनका सही ढंग से नियंत्रण नहीं किया गया, तो विभिन्न प्रजातियों के लिए विलुप्त होने का कारण भी बन सकता है। पर्यावरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं -

पर्यावरण के विभिन्न प्रदूषण वायु, जल एवं मृदा तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि प्रदूषण बहुत सूक्ष्म हो गया है और कण-कण में प्रदूषण व्याप्त है। पर्यावरण असंतुलन की सबसे भयाभय चुनौती है, जलवायु परिवर्तन। केवल 1 डिग्री तापमान में अन्तर किसी भी प्रजाति के अस्तित्व को पूर्णतया नष्ट कर सकता है। आज जलवायु परिवर्तन से ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाऊस प्रभाव, मरुस्थलीकरण, ध्रुवीय व क्षेत्रीय ग्लेशियरों का पिघलना, नई बीमारियों की उत्पत्ति आदि समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

तेजी से बढ़ती आबादी ने शहरीकरण एवं खाद्य सामग्री की आवश्यकताओं में भोजन, आवास और कपड़े की मांग लगभग 3-4 गुना हो गई है। इसके उपाय स्वरूप हम वनों की कटाई को प्रोत्साहित करते हैं और उद्योगों की स्थापना कर बढ़ती हुई आबादी के लिए रोजगार के अवसर तलाशते हैं।

आज का विज्ञान मानव शरीर, पशु अंग सभी प्लांट्स का आनुवांशिक संशोधन करने की क्षमता रखता है, जिसे जेनेटिक इंजीनियरिंग के नाम से जाना जाता है। यह एक विवादास्पद विषय के रूप में चर्चित है, क्योंकि आनुवांशिक प्रदूषण और खाद्य उत्पादों में परिवर्तन न केवल मानव पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं, बल्कि आनुवांशिक संशोधन के रूप में सम्पूर्ण पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं।

हाइड्रोलिक ड्रीलिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें चट्टानों में विस्फोट किया जाता है। इससे बहुत से रसायन चारों ओर फैलकर भूमि एवं जल को प्रदूषित करते हैं। ऑयल स्पिलिंग या तेल रिसाव एक पूर्णतया मानव निर्मित समस्या है, जो विशेष रूप से समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है।

अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए हम पृथ्वी के गर्भ से प्राकृतिक संसाधनों (जीवाश्म ईंधन) का निरन्तर खनन कर निर्यात कर रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं है कि जीवाश्म ईंधन पर्यावरण के लिए हितैषी है, यद्यपि इनके दोहन से ही वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है। वनों की अत्यधिक कटाई, अत्यधिक बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी की जैव-विविधता के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न हुआ है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सागर, ग्लेशियर, नदियां, झीलें एवं भूमिगत जल के स्रोत या पूरी पृथ्वी पर उलब्ध जल में से केवल 2.5 प्रतिशत ही मीठा जल है और इसमें से 1 प्रतिशत हिमनदों पर बर्फ के रूप में जमा है। पृथ्वी के सम्पूर्ण स्थलीय जीवों के लिए केवल 0.03 प्रतिशत पानी पीने योग्य है।

WHO की रिपोर्ट के अनुसार विश्व में तीन में से एक व्यक्ति के पास स्वच्छ और पीने योग्य पानी उपलब्ध नहीं है। मतलब साफ है कि पिछले कुछ दशकों में जल संकट बढ़ा है। बढ़ता जल संकट का स्तर, पीने के पानी की कमी का तनाव एक विश्व संकट के रूप में देखा जा सकता है।

❑ पर्यावरणीय चुनौतियां और कुशल अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

इस समय न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिससे निपटने हेतु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें प्रमुख हैं –

❖ पर्यावरण सम्मेलन

- **स्टॉकहोम सम्मेलन –1972 :** सभी के लिए एक ही पृथ्वी का सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया था।
- **वियना सम्मेलन – 1985 :** मुख्य विषय – ओजोन परत का संरक्षण।
- **मांट्रियल प्रोटोकॉल – 1987 :** ग्रीन हाऊस गैसों की कटौती में प्रयास।
- **पृथ्वी शिखर सम्मेलन – 1992 :** पर्यावरण के महत्वपूर्ण नियमों का दस्तावेज तैयार किया, जिसे एजेण्डा-21 के नाम से जाना जाता है।
- **क्योटो प्रोटोकॉल – 1997 :** कार्बन डाईऑक्साइड की बढ़ती मात्रा में कटौती
- **जोहान्सबर्ग सम्मेलन (रियो + 10) – 2002 :** सतत् विकास की अवधारणाओं को अपनाया गया। साथ ही विश्व एकजुटता कोष की स्थापना को मंजूरी दी गई।
- **रियो + 20 – 2012 :** सतत विकास पर बल देना तथा फ्यूचर वी वांट की संकल्पना दी गई।
- जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क के अन्तर्गत कॉप-22 का आयोजन – 2016
- **कॉप-26 – 2021 :** ग्लोसगो (स्कॉटलैण्ड) में मीथेन गैस के उपयोग में कटौती की प्रतिबद्धता जताई गई है।

❑ विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस एक अभियान है, जिसकी घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन में की गई थी। पहला पर्यावरण दिवस 5 जून, 1973 को मनाया गया। इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य पर्यावरणीय परिवर्तनों पर ध्यान केन्द्रित करने और पृथ्वी के सुरक्षित भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण में सकारात्मक बदलाव का भाग बनने के लिए लोगों को जागरूक एवं प्रेरित करना है।

मानव जीवन के उज्ज्वल भविष्य हेतु पर्यावरण संरक्षण करना अत्यन्त आवश्यक है। पेड़-पौधे हमारे लिए कितने लाभदायक है यह बताने की आवश्यकता नहीं है। कोरोना काल की परिस्थिति से हम सभी अवगत है कि किस प्रकार हम अपने मित्रों, परिजनों, पड़ोसियों एवं अन्य चिर-परिचितों के लिए ऑक्सीजन सिलेण्डर की आपूर्ति हेतु में दर-दर भटक रहे थे। यदि पर्यावरण पर ध्यान न दिया गया, तो हालात इससे भी भयाभय हो सकते हैं।

ना ये धरा होगी, ना ये आसमान होगा।
पर्यावरण के बिना कोई इंसान ना होगा।।

इस पर्यावरण की गिरती स्थिति के सबसे बड़े गुनहगार हम स्वयं है, जिसने न केवल स्वयं का अपितु सम्पूर्ण प्राणी समुदाय (पादप, जीव-जन्तु) के जीवन अस्तित्व पर प्रश्न-चिह्न लगा दिया है। इसके संरक्षण के लिए हमें आगे आना होगा, जिसका ज्वलंत उदाहरण है ग्रेटा थोनबर्ग, जो 15 वर्षीय स्वीडन बालिका का पर्यावरण के प्रति उसका प्रेम हमारे लिए किसी प्रेरणा स्रोत से कम नहीं है।

सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण यही हमारे जीवन का आधार है।

प्रकृति ने हमें एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सौंपा था। अपनी आने वाली पीढ़ियों को इसे हस्तान्तरित करना न केवल हमारी जवाबदेही है, बल्कि महत्वपूर्ण कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व है, क्योंकि यह हमारी विरासत है, जिसे हमें आगे बढ़ाना है।

धरती और अंबर करे पुकार, अच्छे जीवन का यह आधार।।